।। श्री गणेशाय नमः ।।

हिन्दी पाक्षिक Fort Nightly

Baat Hindustan Ki

बात हिन्दुस्तान की

Baat Hindustan Ki

R N I No. : WBHIN / 2021 / 84049

• विक्रम संवत 2081 फाल्गुन शुक्ल द्वितीया, 1-15 मार्च 2025 (1-15 March 2025), • वर्ष 4 (Year-4), • अंक 19 • पृष्ठ 4 (Page-4) • मूल्य रु.2 (Price 2/-)

विक्रम संवत क्या है, कैसे हुई थी इसकी शुरुआत

नवसंवत्सर चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से शुरू होता है। इस दिन हिंदू नववर्ष की शुरुआत भी होती है और चैत्र नवरात्रि भी शुरू होती है। इस साल विक्रम संवत 2082 की शुरुआत 30 मार्च 2025 से हो रही है। नवसंवत्सर के राजा, मंत्री और सेनापति सूर्यदेव रहने वाले हैं। कालयुक्त नामक संवत्सर में कोषाध्यक्ष और फसलों के स्वामी बुध और सुख-समृद्धि के स्वामी शुक्र होंगे। हिंदू धर्म में विक्रम संवत को मान्यता मिली है और नेपाल में यह सरकारी कैलेंडर के तौर पर इस्तेमाल किया जाता है। ऐसे में जानिए विक्रम संवत का इतिहास।

संवत्सर का अर्थ क्या है

संवत्सर का अर्थ 'पूरे साल' से है जो द्वादश मासाः वस्तरः यानी 12 महीने का विशेष काल है। कहा जाता है कि ब्रह्मा जी ने इस सृष्टि की रचना चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के दिन की थी। विक्रम संवत से पहले युधिष्ठिर संवत, कलियुग संवत, सप्तर्षि संवत आदि प्रचलन में आए थे। समझा जाता है कि सभी संवत की शुरुआत चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से होती थी लेकिन बाकी बातों को लेकर स्पष्टता नहीं थी। इसके बाद

विक्रम संवत आया जिसमें वार, तिथियों और नक्षत्र की स्पष्टता के साथ जानकारी थी।

विक्रम संवत की शुरुआत कब हुई थी

बताया जाता है कि उज्जैन के राजा विक्रमादित्य के नाम पर विक्रम संवत की शुरुआत हुई थी। उनके शासनकाल में भारतवर्ष के एक बड़े हिस्से पर विदेशी शासक शकों का आधिपत्य था। वे प्रजा के साथ अन्याय करते थे। क्रूर आचरण की वजह से प्रजा में भय का माहौल था। तब विक्रमादित्य ने शकों का शासन खत्म कर अपना राज स्थापित किया था। इस जीत की स्मृति में विक्रम संवत बनवाया गया। राजा विक्रमादित्य ने यह पंचांग शुरू करवाया गया था। ज्योतिर्विदाभरण ग्रंथ के अनुसार, विक्रमादित्य ने 57 ईसा पूर्व विक्रम संवत चलाया।

इसके अलावा कल्हण की राजतरंगिणी के मुताबिक, 14वीं ईसवीं के आसपास कश्मीर में अंध्र युधिष्ठिर वंश के एक राजा हुआ करते थे। राजा हिरण्य बिना संतान के मर गए थे। इसके बाद अराजकता फैल गई थी। इसके बाद राजा विक्रमादित्य

कब शुरू हुआ

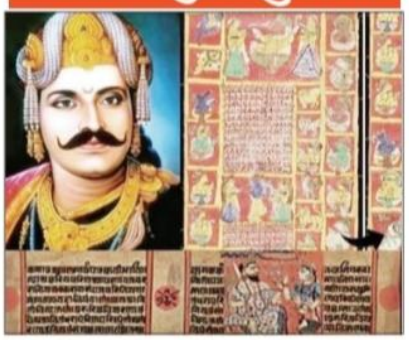

ने वहां के मंत्रियों की सलाह सुनी और मातृगुप्त कश्मीर की सत्ता की जिम्मेदारी दी। नेपाल की राजवंशावली के हिसाब से नेपाल के राजा अंशुवर्मन के समय में राजा विक्रमादित्य के नेपाल जाने का जिक्र सामने आता है।

विक्रम संवत के आधार पर बनता है पंचांग

भारत में विक्रम संवत के आधार पर बनाया गया पंचांग प्रयुक्त होता है। इसके आधार पर ही हिंदू धर्म के त्योहार और तिथियों का निर्धारण होता है। विक्रम संवत हमारे ऋतुचक्र से भी जुड़ा हुआ है। इस समय वसंत की शुरुआत होती है। प्रकृति में नए रंगों से खिल जाती है। पेड़ों में नए पत्ते आते हैं। इसी नवागमन के साथ विक्रम संवत की भी शुरुआत होती है। खास बात यह है कि इसे ऋषि मुनियों ने समावेशी तरीके से तैयार किया है इसलिए यह व्यक्ति विशेष से चलायमान नहीं है। नवसंवत्सर की पूजा का महत्व है। हिंदू धर्म में हर मांगलिक और धार्मिक कार्य में संवत के नाम का प्रयोग किया जाता है। संवत्सर की प्रतिमा स्थापित करके उसकी पूजा करने का भी महत्व है। संवत्सर से आने वाला साल सुखमय होने और सभी दुख-परेशानियां, अनिष्ट दूर करने की प्रार्थना की जाती है।

आम के पत्ते पूजा में शुभ क्यों माने गए हैं, 10 उपयोग

हिन्दू धर्म में पीपल, आम, बड़, गूलर एवं पाकड़ के पत्तों को ही शुभ और पवित्र 'पञ्चपल्लव' कहा जाता है। किसी भी शुभ कार्य में इन पत्तों को कलश में स्थापित किया जाता है या पूजा व अन्य मांगलित कार्यों में इनका अन्य तरीकों से उपयोग होता है। आम के पत्तों को भी शुभ माना गया है। हिन्दू धर्म में पीपल, आम, बड़, गूलर एवं पाकड़ के पत्तों को ही शुभ और पवित्र 'पञ्चपल्लव' कहा जाता है। किसी भी शुभ कार्य में इन पत्तों को कलश में स्थापित किया जाता है या पूजा व अन्य मांगलित कार्यों में इनका अन्य तरीकों से उपयोग होता है। आम के पत्तों को भी शुभ माना गया है।

1. घर के द्वार पर आम की पत्तियां लटकाने से घर में प्रवेश करने वाले हर व्यक्ति के प्रवेश करने के साथ ही सकारात्मक ऊर्जा घर में आती है।

2. आप के पत्तों का उपयोग जल कलश में भी होता है। कलश के जल में आम के पत्ते रखकर उसके उपर नारियल रखा जाता है।

3. यज्ञ की वेदी को सजाने में भी आम के पत्ते का उपयोग होता है।

4. मंडप को सजाने के लिए भी आम के पत्तों का उपयोग होता है।

5. घर के पूजा स्थल या मंदिरों को सजाने में भी आम के पत्तों का उपयोग होता है।

6. तोरण, बांस के खंभे आदि में भी आम की पत्तियां लगाने की परंपरा है।

7. दीवारों पर आम के पत्तों की लड़ लगाकर मांगलिक उत्सव के माहौल को धार्मिक और वातावरण को शुद्ध किया जाता है।

8. आम के पत्ते से ही आरती या हवन के बाद जल छिड़का जाता है।

9. आम के पत्तों की पत्तल और दोने बनाकर उस पर भोजन भी किया जाता है।

10. वैज्ञानिक दृष्टि के अनुसार आम के पत्तों में डायबिटीज को दूर करने की क्षमता है। कैंसर और पाचन से संबंधित रोग में भी आम का पत्ता गुणकारी होता है। आम के रस से कई प्रकार के रोग दूर होते हैं।

आम के पेड़ का महत्व :

आम का फल बहुत ही अच्छा और सरभरा माना जाता है। इसे फलों का राजा कहा गया है। मांगलिक कार्यों में पंचफल का उपयोग किया जाता है जिसमें एक आम का फल भी होता है। इसके फल की हजारों किस्में हैं जिसे हर कोई खाना चाहेगा। इसके पत्ते और लकड़ियां भी उतती ही महत्वपूर्ण है। आम के पेड़ की लकड़ियों का उपयोग समिधा के रूप में वैदिक काल से ही किया जा रहा है। माना जाता है कि आम की लकड़ी, घी, हवन सामग्री आदि के हवन में प्रयोग से वातावरण में सकारात्मकता बढ़ती है। घर में आम की लकड़ी का फर्नीचर कम ही रखना चाहिए। आम की जगह पनस, सुपारी, नान, साल, शीशम, अखरोट या सागौन की लकड़ी का उपयोग करना चाहिए।

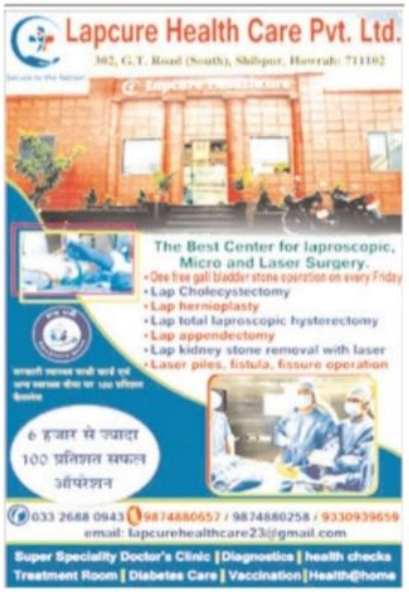

गुरुवार व्रत कथा और पूजा इस विधि से करेंगे तो भगवान विष्णु बनाएंगे धनवान

गुरुवार व्रत पूजा कथा में कई ऐसी बातें बताई गई हैं जिन्हें मनुष्य को ध्यान पूर्वक अपनाना चाहिए। कहते हैं जो व्यक्ति श्रद्धा भाव से गुरुवार को भगवान विष्णु की पूजा करता है और गुरुवार व्रत की कथा कहता और सुनता है उसकी गरीबी और कष्ट को भगवान विष्णु दूर कर देते हैं। जीवन में सुख समृद्धि के लिए गुरुवार के दिन आप भी इस गुरुवार व्रत कथा को सुनें या पढ़ें।

सूर्योदय से पहले उठकर करें स्नान– बृहस्पतिवार के दिन सूर्योदय से पहले ही उठें और नित्यकर्म से निवृत्त होकर पीले रंग के वस्त्र पहनें। इसके बाद पूरे घर में गंगाजल छिड़कें। इसके बाद पूजा घर में श्रीहरि विष्णु की मूर्ति या चित्र स्थापित करें। फिर पीले रंग के गंध-पुष्प और अक्षत चढ़ाएं। इसके बाद चना-गुड़ और मुनक्का चढ़ाकर विधि- विधान से पूजन शुरू करें। इसके बाद धर्मशास्तार्थतत्वज्ञ ज्ञानविज्ञानपारग। विविधार्तिहराचिन्त्य देवाचार्य नमोस्तु ते मंत्र का जप करें। इसके बाद व्रत की कथा पढ़ें। कथा पढ़ने के बाद केले के पेड़ में जल चढ़ाएं।

बृहस्पतिवार व्रत की कथा– मंत्रोच्चार के बाद बृहस्पतिवार व्रत की कथा पढ़ें। यह इस प्रकार से है कि प्राचीन समय की बात है। भारतवर्ष में एक राजा राज्य करता था। वह बड़ा प्रतापी और दानी था। वह नित्य गरीबों और ब्राह्मणों की सेवा-सहायता करता था। वह प्रतिदिन मंदिर में भगवान दर्शन करने जाता था लेकिन यह बात उसकी रानी को अच्छी नहीं लगती थी। वह न ही पूजन करती थी और न ही दान करने में उसका मन लगता था। एक दिन राजा शिकार खेलने वन को गए हुए थे तो रानी और दासी महल में अकेली थी। उसी समय बृहस्पतिदेव साधु भेष में राजा के महल में भिक्षा के लिए गए और भिक्षा मांगी तो रानी ने भिक्षा देने से मन कर दिया। रानी ने कहा कि हे साधु महाराज मैं तो दान पुण्य से तंग आ गई हूं। इस कार्य के लिए मेरे पतिदेव ही बहुत है अब आप ऐसी कृपा करें कि सारा धन नष्ट हो जाए तथा मैं आराम से रह सकूं। साधु ने कहा- देवी तुम तो बड़ी अजीब हो। धन और संतान से कौन दुखी होता है। इसकी तो सभी कामना करते हैं। पापी भी पुत्र और धन की इच्छा करते हैं। अगर तुम्हारे पास अधिक धन है तो भूखे मनुष्यों को भोजन कराओ, प्याऊ लगवाओ, ब्राह्मणों को दान दो, कुआं, तालाब, बावड़ी बाग-बगीचे आदि का निर्माण कराओ। मंदिर, पाठशाला धर्मशाला बनवाकर दान दो। निर्धनों की कुंवारी कन्याओं का विवाह कराओ। साथ ही यज्ञ आदि कर्म करो अपने धन को शुभ कार्यों में खर्च करो। ऐसे करने से तुम्हारा नाम परलोक में सार्थक होगा एवं होगा एवं स्वर्ग की प्राप्ति होगी। लेकिन रानी पर उपदेश का कोई प्रभाव न पड़ा। वह बोली- महाराज मुझे ऐसे धन की आवश्यकता नहीं जिसको मैं अन्य लोगों को दान दूं, जिसको रखने और संभालने में ही मेरा सारा समय नष्ट हो जाए अब आप ऐसी कृपा करें कि सारा धन नष्ट हो जाए तथा मैं आराम से रह सकूं।

गुरुवार व्रत कथा साधु और रानी का संवाद– साधु ने उत्तर दिया यदि तुम्हारी ऐसी इच्छा है तो जैसा मैं तुम्हें बताता हूं तुम वैसा ही करना बृहस्पतिवार को घर को गोबर से लीपना अपने केशों को पीली मिट्टी से धोना। राजा से कहना वह बृहस्पतिवार को हजामत बनवाए, भोजन में मांस- मदिरा खाना और कपड़ा धोबी के यहां धुलने डालना। ऐसा करने से सात बृहस्पतिवार में ही आपका सारा धन नष्ट हो जाएगा। इतना कहकर वह साधु महाराज वहां से अंतर्धान हो गये। इसके बाद रानी ने वही किया जो साधु ने बताया था। तीन बृहस्पतिवार ही बीते थे कि उसका समस्त धन- संपत्ति नष्ट हो गया और भोजन के लिए राजा-रानी तरसने लगे। तब एक दिन राजा ने रानी से कहा कि तुम यहां पर रहो मैं दूसरे देश में चाकरी के लिए चला जाउं क्योंकि यहां पर मुझे सभी मनुष्य जानते हैं इसलिए कोई कार्य नहीं कर सकता। देश चोरी परदेश भीख बराबर है ऐसा कहकर राजा परदेश चला गया वहां जंगल को जाता और लकड़ी काटकर लाता और शहर में बेंचता इस तरह जीवन व्यतीत करने लगा।

गुरुवार व्रत कथा के नियम– इधर, राजा के बिना रानी और दासी दुखी रहने लगीं। किसी दिन भोजन मिलता और किसी दिन जल पीकर ही रह जाती। एक समय जब रानी और दासियों को सात दिन बिना भोजन के रहना पड़ा, तो रानी ने अपनी दासी से कहा, हे दासी। पास ही के नगर में मेरी बहन रहती है। वह बड़ी धनवान है। तू उसके पास जा आ और 5 सेर बेझर मांग कर ले आ ताकि कुछ समय के लिए थोड़ा-बहुत गुजर-बसर हो जाए। दासी रानी की बहन के पास गई। उस दिन बृहस्पतिवार था। रानी का बहन उस समय बृहस्पतिवार की कथा सुन रही थी। दासी ने रानी की बहन को अपनी रानी का संदेश दिया, लेकिन रानी की बहन ने कोई उत्तर नहीं दिया। जब दासी को रानी की बहन से कोई उत्तर नहीं मिला तो वह बहुत दुखी हुई। उसे क्रोध भी आया। दासी ने वापस आकर रानी को सारी बात बता दी। सुनकर, रानी ने कहां की है दासी इसमें उसका कोई दोष नहीं है जब बुरे दिन आते हैं तब कोई सहारा नही अच्छे-बुरे का पता विपत्ति में ही लगता है जो ईश्वर की इच्छा होगी वही होगा यह सब हमारे भाग्य का दोष है। यह सब कहकर रानी ने अपने भाग्य को कोसा। उधर, रानी की बहन ने सोचा कि मेरी बहन की दासी आई थी। लेकिन मैं उससे नहीं बोली, इससे वह बहुत दुखी हुई होगी। कथा सुनकर और पूजन समाप्त कर वह अपनी बहन के घर गई और कहने लगी, हे बहन। मैं बृहस्पतिवार का व्रत कर रही थी। तुम्हारी दासी गई लेकिन जब तक कथा होती है, तब तक न उठते है और न बोलते है, इसीलिये मैं नहीं बोली। कहो, दासी क्यों गई थी।

गुरुवार व्रत कथा रानी और उसकी बहन का संवाद– रानी बोली, बहन। हमारे घर अनाज नहीं

था। ऐसा कहते-कहते रानी की आंखें भर आईं। उसने दासियों समेत 7 दिन तक भूखा रहने की बात भी अपनी बहन को बता दी। इसीलिए मैंने दासी को तुम्हारे पास 5 सेर बेझर लेने के लिए भेजा था।रानी की बहन बोली, बहन देखो बृहस्पति देव सबकी मनोकामना पूर्ण करते है। देखो, शायद तुम्हारे घर में अनाज रखा हो। पहले तो रानी को विश्वास नहीं हुआ परंतु बहन के आग्रह करने पर उसने दासी को अंदर भेजा।दासी घर के अंदर गई तो वहां पर उसे एक घड़ा बेझर से भरा मिल गया। उसे बड़ी हैरानी हुई। उसने बाहर आकर रानी को बताया। दासी रानी से कहने लगी, हे रानी। जब हमको भोजन नहीं मिलता तो हम व्रत ही तो करते है, इसलिये क्यों न इनसे व्रत और कथा की विधि पूछ ली जाये, हम भी व्रत किया करेंगे। दासी के कहने पर रानी ने अपनी बहन से बृहस्पति व्रत के बारे में पूछा। उसकी बहन ने बताया, बृहस्पतिवार के व्रत में चने की दाल गुड़ और मुनक्का से विष्णु भगवान का केले के वृक्ष की जड़ में पूजन करें तथा दीपक जलाएं और कथा सुनें। उस दिन एक ही समय भोजन करें भोजन में पीले खाद्य पदार्थ का सेवन जरूर करें। इससे गुरु भगवान प्रसन्न होते है, अन्न, पुत्र और धन का वरदान देते हैं। साथ ही सभी मनोकामनाएं पूर्ण करते हैं। व्रत और पूजन की विधि बताकर रानी की बहन अपने घर लौट आई।

रानी ने ऐसे किया बृहस्पति देव को प्रसन्न– रानी और दासी दोनों ने निश्चय किया कि बृहस्पति देव भगवान का पूजन जरूर करेंगें। सात रोज बाद जब बृहस्पतिवार आया तो उन्होंने व्रत रखा। घुड़साल में जाकर चना और गुड़ बीन लाईं तथा उसकी दाल से केले की जड़ तथा विष्णु भगवान का पूजन किया। अब पीला भोजन कहां से आए। दोनों बड़ी दुखी हुईं। परंतु उन्होंने व्रत किया था इसलिये बृहस्पतिदेव भगवान प्रसन्न थे। एक साधारण व्यक्ति के रुप में वे दो थालों में पीला भोजन लेकर आए और दासी को देकर बोले, हे दासी। यह भोजन तुम्हारे और तुम्हारी रानी के लिये है, इसे तुम दोनों ग्रहण करना। दासी भोजन पाकर बहुत प्रसन्न हुई। उसने रानी से कहा चलो रानी जी भोजन कर लो परंतु रानी को भोजन आने के बारे में कुछ भी नहीं पता था इसलिए उसने कहा कि जा तू ही भोजन कर क्योंकि तू व्यर्थ में हमारी हंसी उड़ाती है। तब दासी ने कहा एक व्यक्ति भोजन दे गया है तब रानी ने कहा वह व्यक्ति तेरे लिए ही भोजन दे गया है तू ही भोजन कर। तब दासी ने कहा वह व्यक्ति हम दोनों के लिए दो थालों में सुंदर पीला भोजन दे गया है इसलिए मैं और आप दोनों ही साथ-साथ भोजन करेंगे। यह सुनकर रानी बहुत प्रसन्न हुई और दोनों ने गुरु भगवान को नमस्कार कर भोजन किया।

गुरुवार कथा रानी और दासी संवाद– उसके बाद से वे प्रत्येक बृहस्पतिवार को गुरु भगवान का व्रत और पूजन करने लगी। बृहस्पति भगवान की कृपा से उनके पास धन हो गया। लेकिन रानी फिर पहले की तरह आलस्य करने लगी। तब दासी बोली, देखो रानी। तुम पहले भी इस प्रकार आलस्य करती थी, तुम्हें धन के रखने में कष्ट होता था, इस कारण सभी धन नष्ट हो गया। अब गुरु भगवान की कृपा से धन मिला है तो फिर तुम्हें आलस्य होता है। बड़ी मुसीबतों के बाद हमने यह धन पाया है, इसलिये हमें दान-पुण्य करना चाहिये। अब तुम भूखे मनुष्यों को भोजन कराओ प्याऊ लगवाओ, ब्राह्मणों को दान दो, कुआं- तालाब, बावड़ी और बाग-बगीचे आदि का निर्माण कराओ। मंदिर, पाठशाला और धर्मशाला बनवा कर दान दो। निर्धनों की कुंवारी कन्याओं का विवाह कराओ। साथ ही यज्ञ आदि कर्म करो अपने धन को शुभ कार्यों में खर्च करो। जिससे तुम्हारे कुल का यश बढ़े और स्वर्ग प्राप्त हो और पित्तर प्रसन्न हों। दासी की बात मानकर रानी शुभ कर्म करने लगी। उसका यश फैलने लगा। एक दिन रानी और दासी आपस में विचार करने लगीं कि न जाने राजा किस दशा में होंगें, उनकी कोई खोज खबर भी नहीं है। उन्होंने श्रद्धापूर्वक बृहस्पति भगवान से प्रार्थना की कि राजा जहां कहीं भी हो, शीघ्र वापस आ जाएं।

राजा को दिए बृहस्पति देव ने स्वप्न में दर्शन– उसी रात्रि को बृहस्पति देव ने राजा को स्वप्न में कहा कि हे राजा उठ तेरी रानी तुझको याद करती है अपने देश को लौट जा। राजा प्रातः काल उठा और जंगल से लकड़ी काटने के लिए जंगल की ओर चल पड़ा। जंगल से गुजरते हुए विचार करने लगा कि रानी की गलती से उसे कितने दुःख भोगने पड़े राजपाट छोड़कर जंगल में आकर में आकर रहना पड़ा जंगल से लकड़ी काटकर शहर में बेचकर गुजारा करना पड़ा। और अपनी दशा को याद करके व्याकुल होने लगा। उसी समय राजा के पास बृहस्पति देव साधु के वेष में आकर बोले, हे लकड़हारे। तुम इस सुनसान जंगल में किस चिंता में बैठे हो, मुझे बतलाओ। यह सुन राजा के नेत्रों में जल भर आया। साधु की वंदना कर राजा ने अपनी संपूर्ण कहानी सुना दी। महात्मा दयालु होते है। वे राजा से बोले, हे राजा तुम्हारी पत्नी ने बृहस्पति देव के प्रति अपराध किया था, जिसके कारण तुम्हारी यह दशा हुई। अब तुम चिंता मत करो भगवान तुम्हें पहले से अधिक धन देंगें। देखो, तुम्हारी पत्नी ने बृहस्पतिवार का व्रत शुरू कर दिया है। अब तुम भी बृहस्पतिवार के व्रत में चने की दाल गुड़ और मुनक्का से विष्णु भगवान का केले के वृक्ष की जड़ में पूजन करो तथा दीपक जलाकर कथा सुनों। उस दिन एक ही समय भोजन करना लेकिन भोजन में पीले खाद्य पदार्थ का सेवन जरूर करना। भगवान तुम्हारी सब कामनाओं को पूर्ण करेंगें। साधु की बात सुनकर राजा बोला, हे प्रभो। लकड़ी बेचकर तो इतना पैसा भ्ई नहीं बचता, जिससे भोजन के उपरांत कुछ बचा सकूं। मैंने रात्रि में अपनी रानी को व्याकुल देखा है। मेरे पास कोई साधन नही, जिससे उसका समाचार जान सकूं। फिर मैं कौन सी कहानी कहूं, यह भी मुझको मालूम नहीं है। साधु ने कहा, हे राजा। मन में बृहस्पति भगवान के पूजन-व्रत का निश्चय करो। वे स्वयं तुम्हारे लिये कोई राह बना देंगे। बृहस्पतिवार के दिन तुम रोजाना की तरह लकड़ियां लेकर शहर में जाना। तुम्हें रोज से दोगुना धन मिलेगा जिससे तुम भली-भांति भोजन कर लोगे तथा बृहस्पति देव की पूजा का सामान भी आ जायेगा।राजा ने ऐसा ही किया और उसको मनोवांछित फल की प्राप्ति हो गई। इस प्रकार जो भी यह कथा पढ़ता या सुनता है उसके सभी मनोरथ पूरे होते हैं।

राम–रावण की धनुष गाथा

कोलकाता (संघमित्रा सक्सेना) : भगवान राम की जीवन गाथा एवं राक्षस रावण द्वारा प्रभावित जीवनयात्रा में कई घटनाएं पौराणिक कथाओं में कथित हैं। रामनवमी की पावन पर्व में आज जानते है, राम रावण की धनुष गाथा – आस्था और विश्वास की पर्व रामनवमी में, भगवान श्री राम के जन्मोत्सव हर्ष और उल्लास के साथ मनाया जाता हैं। हवन और पूजन के माध्यम से बहीखाता की शुरुआत होती हैं। चैत्र मास की शुक्लपक्ष में राम नवमी मनाई जाती हैं, इसे चैत्र नवरात्रि भी कहा जाता हैं। लेकिन क्या जानते हैं कि इसके साथ जुड़ी हैं राम रावण की धनुष गाथा। 'श्री रामायः रामभद्रयः रामचंद्राय बेधसे रघुनाथया नाथायां सीतायां पतायें नमः' भगवान श्री राम आदर्श ज्येष्ठ पुत्र और भाई तथा माता सीता के पति को नमन। पौराणिक मान्यता की अनुसार रामायण में दिव्य धनुष की जिक्र हैं। इस धनुष की महत्व कुछ कम नहीं। कहा जाता है कि भगवान शिव के पास एक दिव्य धनुष था। इस धनुष का नाम था पिनाक। देवदी देव महादेव ने त्रिपुरासुर का वध इस धनुष से किया था। जो धरोहर स्वरूप मिथिला के राजा जनक को प्राप्ति हुई थी। पिनाक धनुष की विशेषता- पिनाक की टंकार से स्वर्ग,धरती और पाताल लोक में भूचाल आती थी। इतना तीव्रता थी पिनाक में। इसपर प्रत्यंचा चढ़ाते समय बादल फट जाती थी। इतनी शक्तिशाली था पिनाक। पिनाक की उठाना कोई सामान्य बात नई थी। अच्छे अच्छे महारथी पिनाक को उठाने में असफल हुए यानि पिनाक में अदभुत शक्ति था। एकबार महाराज जनक अपनी सुपुत्री सीता को लेकर परशुराम के आश्रम गाएं। जहां सीता ने अचानक पिनाक को उठा लिया। तब परशुराम ने मिथिला के राजा जनक को कहा कि जो सज्जन तथा धनुर्धर पिनाक पर प्रत्यंचा चढ़ाएगा वही सीता के योग्यजीवनसाथी होगा। परशुराम के बात को ध्यान में रखते हुए राजा जनक ने अपनी पुत्री सीता की स्वयंवर का आयोजन किया। कई राजकुमार इस सभा में आएं लेकिन पिनाक पर प्रत्यंचा और भंग सिर्फ अयोध्या के राजा दशरथ की ज्येष्ठपुत्र श्री राम ने किया। तभी से राम की श्लोक से गुंज उठी जनकपुरी, 'नव कंज लोचन कंज मुख कर कंज पद कंजारुणम्' यानि श्रीरामचन्द्रजी कृपालु हैं। हे मन! उनके चरणों का भजन कर, जो संसार के दुःखों को हरने वाले हैं। रावण का धनुष कैसा था– पुराण के अनुसार रावण के पास भी एक धनुष था। इस धनुष का नाम था पौलस्त्य। राक्षस रावण ने अपनी तपस्या से भगवान शिव को प्रसन्न प्रसन्न किया था इसके उपरांत भगवान शिव ने वरदान के स्वरूप रावण को पिनाक धनुष प्रदान किया था। लेकिन अहंकारी रावण ने पिनाक को अपने में असफल रही।

काशी हिंदू विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में ऐतिहासिक पत्रिकाएं का बुरा हाल

बनारस : जब भी बनारस जाने का अवसर मिलता है तो थोड़ा समय निकालकर वहां के पुस्तकालयों को देखने जरूर जाता हू। करीब तीन साल पहले बनारस गया था। संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय के उस समय के कुलपति प्रोफेसर राजाराम शुक्ल ने मनोयोगपूर्वक अपने विश्वविद्यालय का पुस्तकालय दिखाया था। संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय की लाइब्रेरी बेहद समृद्ध है। हमने वहां काफी समय बिताकर ग्रंथों और पांडुलिपियों को देखा था। उस पुस्तकालय में पहली बार स्वर्णाक्षरों में लिखी पांडुलिपि देखी थी। पांडुलिपियों और उनके संरक्षण के बारे में बातचीत के क्रम में राजाराम शुक्ल ने उनको बेहतर ढंग से सहेजे जाने को लेकर चिंता जताई थी। संसाधन की कमी की बात सामने आई थी। पांडुलिपियों को एक खास किस्म के कपड़े में लपेटकर रखा जाता है जिसके लिए धन की आवश्यकता थी। उसी समय काशी विश्वनाथ मंदिर के पास के गोयनका पुस्तकालय देखा था। वहां कई दुर्लभ ग्रंथ थे, जो या तो खुली रैक पर रखे थे या फिर अल्मारियों में बंद थे। बेहतर रखरखाव की कमी थी। बताया जा रहा है कि अब गोयनका पुस्तकालय को दूसरी जगह शिफ्ट कर दिया गया है। पता नहीं पुस्तकें किस हाल में हैं। बनारस में ही काशी हिंदू विश्वविद्यालय की सेंट्रल लाइब्रेरी है, नाम है सयाजीराव गायकवाड़ ग्रंथालय। काशी हिंदू विश्वविद्यालय की इस लाइब्रेरी का बेहद समृद्ध इतिहास रहा है। पुस्तकालय की वेबसाइट पर उपलब्ध जानकारी के अनुसार इसकी स्थापना 1917 में की गई थी। कई बार इसकी जगह बदली। 1941 से वर्तमान भवन में पुस्तकालय चल रहा है। इस पुस्तकालय भवन का निर्माण बड़ौदा के महाराजा सयाजीराव गायकवाड़ ने करवाया था। महामना पंडित मदन मोहन मालवीय ने 1931 में लंदन प्रवास के दौरान ब्रिटिश म्यूजियम लाइब्रेरी देखी थी। उन्होंने ही बड़ौदा के महाराज को सुझाव दिया था कि काशी हिंदू विश्वविद्लाय के पुस्तकालय की इमारत भी वैसी ही होनी चाहिए। काशी हिंदू विश्वविद्यालय के ग्रंथालय से आरंभिक दिनों में प्रख्यात इतिहासकार सर यदुनाथ सरकार जुड़े रहे थे। काशी हिंदू विश्वविद्यालय के इस ग्रंथालय की चर्चा इस वजह से की जा रही है कि यहां रखी ऐतिहासिक महत्व की पत्रिकाएँ बहुत बुरी स्थिति में हैं। ग्रंथालय के प्रथम तल पर पत्र-पत्रिकाओं के विभाग में बेहद महत्वपूर्ण पत्रिकाएँ संग्रहित हैं। इन पत्रिकाओं में सरस्वती, विशाल भारत, माधुरी, कल्पना, विश्वमित्र, कलकत्ता रिव्यू, हिन्दुस्तान रिव्यू, जर्नल आफ इंडियन ट्रेड, इंडियन फाइनेंस जैसी पत्रिकाओं की फाइलें उपलब्ध है। इन पत्रिकाओं का स्थायी महत्व है क्योंकि उसमें उस दौर का पूरा इतिहास है। साहित्यिक पत्रिकाओं में हिंदी साहित्य का स्वाधीनता पूर्व से लेकर बाद के कई दशकों का इतिहास दर्ज है।वित्त और वाणिज्य से जुड़ी पत्रिकाएं इन विषयों में शोध करनेवालों के लिए बेहतरीन सोर्स हैं। समाज शास्त्र की पत्रिकाओं से समाज में हो रहे बदलाव या उसके विकासक्रम को रेखांकित कर सकते हैं। रखरखाव के अभाव में पत्रिकाएं नष्ट होने के कगार पर पहुंच गई हैं। कुछ पत्रिकाओं की जिल्द इतनी खराब हो गई हैं या उनके पृष्ठ इतने जर्जर हो गए हैं कि छूते ही फट जा रहे हैं। पत्रिका खोलकर देखने पर पन्ने हाथ में आ जाते हैं। कई ऐतिहासिक पत्रिकाएं तो फाइलों में रस्सियों से बांध कर खुले रैक पर रखी हुई हैं। नमी और धूल से वो खराब हो रही हैं। पत्रिकाओं को पलटने के बाद उनको संभालना बेहद कठिन है। ग्रंथालय के इस हिस्से में रोशनी भी कम है और अगर वहां की खिड़की खोलने का प्रयास किया जाए तो उसके भी टूटने का खतरा है। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि देश के सबसे समृद्ध पुस्तकालयों में एक में उपलब्ध पत्रिकाओं को नमी और धूल से बचाने का कोई उपाय नहीं किया गया है। अपराधियों का एक बायोमैट्रिक डाटाबेस तैयार करने में मदद मिलेगी। जिस पुस्तकालय का सपना महामना मदनमोहन मालवीय ने देखा और जिसको सर यदुनाथ सरकार ने जतन से संजोया वो आज इस हालत में क्यों पहुंच गया है। काशी हिंदू विश्वविद्यालय का प्रशासन अपनी धरोहर को लेकर उदासीन क्यों है। ऐसिहासिक महत्व की पत्र-पत्रिकाएं धूल क्यों फांक रही हैं। यह भी नहीं कहा जा सकता है कि केंद्र सरकार से संबद्ध उच्च शिक्षण संस्थानों में धन की कमी है। इस वित्त वर्ष में केंद्र सरकार ने उच्च शिक्षा के बजट आवंटन को तेरह प्रतिशत बढ़ाकर चालीस हजार करोड़ से अधिक कर दिया है। सयाजीराव केंद्रीय ग्रंथालय की वेबसाइट पर उपलब्ध जानकारी के मुताबिक वहां एक पुस्तकालयाध्यक्ष, आठ उप-पुस्तकालयाध्यक्ष और पांच सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष कार्यरत हैं। देश की शिक्षा के भारतीयकरण की प्रतीक्षा। फाइल बावजूद इसके पत्रिकाओं का उचित देखभाल न हो पाना हैरान भी करता है और चिंतित भी। काशी हिंदू विश्वविद्यालय केंद्रीय विश्वविद्यालय है और प्रधानकेंद्रीय विश्वविद्यालय है और सोर्स है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के निर्वाचन क्षेत्र में स्थित है। इससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात है कि ये ज्ञान का केंद्र है और देश विदेश के तमाम शोधार्थी यहां शोध करने के लिए आते हैं। जरा सोचिए कि जब शोधार्थी इतनी बड़ी लाइब्रेरी के किसी हिस्से को बदहाल देखते होंगे तो इस ज्ञान केंद्र की कैसी छवि उनके मन में बनती होगी। सवाल यह उठता है कि हम अपनी समृद्ध विरासत को लेकर इतने उदासीन क्यों रहते हैं। इस उदासीनता की वजह क्या उन लोगों की नासमझी है जो इनके रखरखाव के लिए उत्तरदायी हैं या फिर उनकी लापरवाही है या दोनों। इस बारे में अगर समग्र दृष्टिकोण से विचार करते हैं तो ये लगता है कि उदासीनता की वजह नासमझी और लापरवाही दोनों है। इसके अलावा एक वजह तकनीक के उपयोग को लेकर उत्साही नहीं होना है। अन्यथा आज के डिजीटल युग में पत्रिकाएं इस तरह से नष्ट नहीं हो रही होतीं। उनको डिजीटाइज करके या उनकी माइक्रो फिल्म बनाकर संरक्षित किया जा सकता है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी लगातार तकनीक के उपयोग पर जोर दे रहे हैं लेकिन उनके ही निर्वाचन क्षेत्र में स्थित केंद्रीय विश्वविद्यालय में तकनीक के उपयोग को लेकर उदासीनता समझ में नहीं आती। विश्वविद्यालय प्रशासन को तत्काल इन पत्रिकाओं को संरक्षित करने के लिए कदम उठाना चाहिए।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में कहा गया है कि सभी शास्त्रीय भाषाओं और साहित्य का अध्ययन करने वाले अपने संस्थानों और विश्वविद्यालयों का विस्तार करेगा और उन हजारों पांडुलिपियों को इकट्ठा करने, संरक्षित करने और अनुवाद करने और उनका अध्ययन करने का मजबूत प्रयास करेगा, जिस पर अभी तक ध्यान नहीं गया है। इसी प्रकार से सभी संस्थानों और विश्वविद्यालयों में जिसमें शास्त्रीय भाषओं को और साहित्य पढ़ाया जा रहा है, उनका विस्तार किया जाएगा। अभी तक उपेक्षित रहे लाखों अभिलेखों के संग्रह, संरक्षण, अनुवाद और अध्ययन के दृढ़ प्रयास किए जाएंगे। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में अभिलेखों के संरक्षण पर बल दिया गया है। ज्ञान साम्रगी के संरक्षण के लिए अगर आवश्यकता हो तो जनसहयोग भी लिया जाना चाहिए। काशी हिंदू विश्वविद्यालय की लाइब्रेरी में रखी पत्रिकाओं के संरक्षण के लिए निजी क्षेत्र का भी सहयोग लेना पड़े तो लिया जाना चाहिए। निजी कंपनियों से संपर्क करके उनको इस कार्य में निवेश करने के लिए संवाद किया जाना चाहिए। कोई सरकारी नियम इसमें बाधा बनती हो तो उसको तत्काल बदलना चाहिए। संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय में रखी गई दुर्लभ पांडुलिपियों के संरक्षण के लिए जिस विशेष कपड़े की आवश्यकता है उसके लिए भी संसाधन उपलब्ध करवाया जाना चाहिए। पुस्तकें और पत्र पत्रिकाएं को संरक्षित कर हम अपनी संस्कृति को न केवल मजबूत करते हैं बल्कि आनेवाली पीढ़ी को संस्कारित भी करते हैं। पिछले दिनों बिहार के पूर्णिया से समाचार आया था कि वहां के जिलाधिकारी राहुल कुमार ने अनूठी पहल की और जिले के 230 ग्राम पंचायतों में पुस्तकालय खोला है। ये जनसहयोग से संभव हो पाया। अगर जनसहयोग से नए पुस्तकालय खुल सकते हैं तो पहले के पुस्तकालयों का संरक्षण भी संभव है। आवश्यकता है इच्छाशक्ति और पहल की।

गाय, कुत्ते और पंछी को पानी व आहार देने से खुल जाते हैं किस्मत के दरवाजे

ज्योतिष के अनुसार गाय, कुत्ते और पंछी आदि को भोजन पानी देने का महत्व बताया गया है। हिन्दू धर्म में भी पंचबलि कर्म का महत्व बताया गया है। पंचबलि अर्थात गोबलि, श्वान बलि, काकबलि, देवादिबलि और पिपलिकादि कर्म किया जाता है। गोबलि अर्थात गाय को, श्वान बलि अर्थात कुत्ते को, काकबलि अर्थात कौवे या पंछी को, देवबलि अर्थात अग्नि और अन्य देवताओं को और पिपलिकादि बलि अर्थात चींटी-कीड़े-मकौड़ों इत्यादि को भोजन पानी खिलाना होता है। पुराणों के अनुसार गाय में सभी देवताओं का वास माना गया है। अथर्ववेद के अनुसार- 'धेनु सदानाम रईनाम' अर्थात गाय समृद्धि का मूल स्रोत है। गाय में सकारात्मक ऊर्जा का भंडार होता है, जो भाग्य को जागृत करने की क्षमता रखती है। गाय को अन्न और जल देने से सभी तरह के संकट दूर होकर घर में सुख, शांति और समृद्धि के द्वारा खुल जाते हैं। प्रतिदिन गाय को रोटी खिलाने से गुरु और शुक्र बलवान होता और धन-समृद्धि बढ़ती है।कुत्ते को भोजन देने से भैरव महाराज प्रसन्न होते हैं और हर तरह के आकस्मिक संकटों से वे भक्त की रक्षा करते हैं। कुत्ता आपकी राहु, केतु के बुरे प्रभाव और यमदूत, भूत प्रेत आदि से रक्षा करता है। कुत्ते को प्रतिदिन भोजन देने से जहां दुश्मनों का भय मिट जाता है वहीं व्यक्ति निडर हो जाता है। ज्योतिषी के अनुसार केतु का प्रतीक है कुत्ता। कुत्ता पालने या कुत्ते की सेवा करने से केतु का अशुभ प्रभाव समाप्त हो जाता है। पितृ पक्ष में कुत्तों को मीठी रोटी खिलानी चाहिए। पंछी में कौए को अतिथि-आगमन का सूचक और पितरों का आश्रय स्थल माना जाता है। कौओं को भोजन कराना अर्थात अपने पितरों को भोजन कराना माना गया है। कौए को अन्न जल देने से सभी तरह का पितृ और कालसर्प दोष दूर हो जाता है। पक्षियों में कौवे, हंस, गरुड़, तोता और चिड़ियों को अन्न खिलाने से सभी तरह के कर्ज से मुक्ति मिल जाती है। इससे पितृदोष, शनिदोष और मंगलदोष से भी मुक्ति मिलती है। इससे घर परिवार में सुख, शांति और प्रसन्नता बढ़ती है।

हिंदू राष्ट्र संगोष्ठी का आयोजन

मधुबनी (वैद्यनाथ झा) : भामतीकार वाचस्पति मिश्र के जन्मस्थली अंधराठाढ़ी जिला मधुबनी बिहार में हिंदू राष्ट्र संगोष्ठी का आयोजन जगद्गुरु शंकराचार्य गोवर्धन पीठाधीश्वर महाराज जी के शिष्य श्री प्रेमचंद्र झा जी के सानिध्य में संपन्न हुआ जिसमें उन्होंने भव्य भारत के निर्माण के लिए हर क्षेत्र में, हर गांव में साप्ताहिक संगोष्ठी के माध्यम से लोगों को जोड़ने का प्रयास करने को कहा। आदिगुरु शंकराचार्य द्वारा स्थापित चारों धाम के रक्षा के लिए चार पीठ के बारे में जानकारी दिए। भारत में धर्म नियंत्रित पक्षपात विहिन शोषण विनर मुक्त सर्वहित प्रद सनातन शासन स्थापित करने के लिए प्रथम चरण में भारत को हिंदू राष्ट्र घोषित करवाना। सुसंस्कृत,सुशिक्षित, सुरक्षित, संपन्न,सेवापारायण व्यक्ति एवं समाज की संरचना मुख्य उद्देश्य है ।सर्वप्रथम श्री वाचस्पति मिश्र जी के आराध्य भगवती मां परमेश्वरी देवी का पूजन एवं अर्जन किया। मिथिला यूनिवर्सिटी के पूर्व विभागाध्यक्ष श्री दयानंद मिश्र, श्री काशी नाथ झा किरण, प्रोफेसर हरदेव झा एवं श्री सुमति सुमन ने भी अपने विचार रखें। कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए श्री रतीश झा , श्री मोहन झा, श्री कुंदन झा ,श्री शिवानंद झा ,श्री जयप्रकाश झा एवं अन्य सक्रिय रहे।

श्रीकृष्ण की लीलाओं से होली का सही मतलब और महत्व

होली केवल मौज-मस्ती और उल्लास का प्रतीक नहीं है, रंगों का त्योहार भी है। यह एक ऐसा पर्व है जो हमें भगवान श्रीकृष्ण की लीलाओं के माध्यम से जीवन के गहरे ज्ञान से परिचित कराता है। होली का सही अर्थ यह कि अपने भीतर की बुराइयों को जलाकर प्रेम और सद्भाव के रंगों को जीवन में भरना। अनंत श्री विभूषित जगद्गुरु श्री प्रियदर्शी महाराज द्वारा रचित अभूतपूर्व ग्रन्थ 'श्री कृष्ण चरित मानस'(रसायन महाकाव्य) के अनुसार भगवान श्रीकृष्ण की चंचल लीलाएँ होली के त्योहार का एक अभिन्न अंग हैं। वृंदावन और मथुरा में खेली जाने वाली लठमार होली एवं लड्डू होली, भगवान श्रीकृष्ण की गोपियों और सखाओं के साथ की गई शरारतों की याद दिलाती है। यह हमें सिखाती है कि जीवन में हास्य और मनोरंजन का भी महत्व है। श्रीकृष्ण की लीलाएँ हमें बताती हैं कि प्रेम और मित्रता के बंधन हमारे जीवन में कितने महत्वपूर्ण होते हैं।

होली का आध्यात्मिक महत्व– होली का त्योहार हमें प्रह्लाद और होलिका की कथा के माध्यम से बुराई पर अच्छाई की विजय का संदेश देता है। होलिका दहन हमें सिखाता है कि हमें अपने भीतर की नकारात्मकता और बुराइयों को जलाकर शुद्ध होना चाहिए। यह हमें याद दिलाता है कि सत्य और धर्म की हमेशा जीत होती है।

होली और सामाजिक समरसता– होली का त्योहार सामाजिक समरसता का प्रतीक है। इस दिन, लोग अपने जाति, धर्म और सामाजिक स्थिति के भेदभाव को भूलकर एक-दूसरे के साथ मिलकर खुशियाँ मनाते हैं। यह हमें सिखाता है कि हमें सभी मनुष्यों को समान रूप से प्यार और सम्मान देना चाहिए। होली हमे यह निर्देश देती है की हमें अपने समाज में एकता और सद्भाव को बढ़ावा देना चाहिए।

होली के रंगों का महत्व– होली में इस्तेमाल होने वाले विभिन्न रंग विभिन्न भावनाओं और मूल्यों का प्रतिनिधित्व करते हैं। लाल रंग प्रेम और उत्साह का प्रतीक है, हरा प्रकृति और समृद्धि का, पीला ज्ञान और खुशी का, और नीला रंग शांति और स्थिरता का प्रतीक है। ये रंग हमें सिखाते हैं कि हमें अपने जीवन में इन सभी गुणों को संतुलित रखना चाहिए।

होली से जीवन का ज्ञान– होली का त्योहार हमें जीवन के कई महत्वपूर्ण सबक सिखाता है। यह हमें सिखाता है कि हमें अपने जीवन में खुश रहना चाहिए, दूसरों के साथ प्रेम और सद्भाव से रहना चाहिए, बुराई पर अच्छाई की जीत में विश्वास रखना चाहिए। होली हमें यह भी याद दिलाती है कि जीवन एक उत्सव है और हमें इसे पूरी तरह से जीना चाहिए।

होली केवल एक त्योहार नहीं, यह एक ऐसा अवसर है जो हमें भगवान श्रीकृष्ण की लीलाओं के माध्यम से जीवन के गहरे ज्ञान से परिचित कराता है। यह हमें सिखाता है कि हमें अपने जीवन में प्रेम, सद्भाव और एकता को महत्व देना चाहिए। होली हमें यह भी याद दिलाती है कि हमें अपने भीतर की बुराइयों को जलाकर अच्छाई को अपनाना चाहिए। होली का सही अर्थ केवल रंगों में खेलना नहीं, बल्कि जीवन के रंगों को प्रेम और सद्भाव से भरना है।

पूर्व सचिव प्रदेश मंत्रालय के सचिव बनाए गए

पटना : बिहार प्रदेश सरकार के पूर्व विधान सभा सचिव श्री अनिल कुमार जायसवाल को एक बार फिर से बिहार प्रदेश सरकार में बड़ी जिम्मेदारी देते हुए प्रदेश राजस्व एवं भूमि सुधार मंत्रालय में आप्त सचिव बनाया गया है। श्री अनिल कुमार जायसवाल ने हमारे सहयोगी समाजसेवी व ई आरके जायसवाल से बातचीत के दौरान जानकारी देते हुए बताया की बिहार प्रदेश के राजस्व एवं भूमि सुधार मंत्री श्री संजय सरावगी जी द्वारा स्वयं दिए गए जिम्मेदारी अब यह मेरी परीक्षा है, साथ ही मेरा पहला कर्तव्य के साथ जिम्मेदारी है की उनके इस विश्वाश को हम निष्ठा पूर्वक निभाएँ। मंत्री संजय सरावगी के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा की मंत्री जी अपने सहयोगियों से निष्ठा पूर्वक प्रदेश सरकार ज़िम्मेदारियों को निभाने की अपील करते हुए और हमारे पूर्व के कार्यों को सराहाते हुए कहा कि श्री जायसवाल पहले भी प्रदेश सरकार के बेहद महत्व-पूर्ण ज़िम्मेदार अधिकारी रहे हैं और उन्हें बरसों से जानता हूँ। श्री जायसवाल ने कहा कि यह पल मेरे लिए भावनात्मक व बेहद ऊर्जा वर्धक था। प्रदेश के गणमान्य व्यक्तियों द्वारा बधाई देने की सिलसिला जारी है। बिहार बिजेपी के अध्यक्ष दिलिप जायसवाल, पीरपैंती के विधायक ललन कुमार, मोहनीयां के विधायक संगीता कुमार, ढाका विधायक पवन जायसवाल, प्रदेश वैश्य समाज के उपाध्यक्ष संजय जायसवाल, पूर्व मंत्री तारकिशोर प्रसाद व समाजसेवी ई आरके जायसवाल आदि ने भी फोन कर बधाई व शुभकामनाएँ दी।

काशीपुर बेलगछिया एमएलए कप में सितारे उतरे ज़मीन पर

कोलकाता (संघमित्रा सक्सेना) : काशीपुर बेलगछिया कमिटी ने एमएलए कप आयोजित किया। काशीपुर बेलगछिया असेंबली के विधायक तथा कोलकाता म्युनिसिपल कॉरपोरेशन के डेप्युटी मेयर अतिन घोष एवं उनके सुपुत्री प्रियदर्शिनी घोष बावा ने तीन दिवसीय क्रिकेट मैच की आयोजन की। कोलकाता के दो जानेमाने फुटबॉल टीम वेस्टबंगल और मोहिंबागन ने भी इस टूर्नामेंट की शोभा बढ़ाएं। श्रीकेश झावर स्मृति काशीपुर बेलगछिया एमएलए कप अंडर 19 क्रिकेट टूर्नामेंट की शुरुआत इंडियन क्रिकेट टीम की पूर्व क्रिकेटर तथा कप्तान दिलीप वेंगसरकर ने किए। पूर्व क्रिकेटर ऋद्धिमान सहा एवं लक्ष्मीरतन शुक्ला ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएं। तीन दिवसीय इस मैच के अंतिम दिन हर प्रतिभागी को उत्साहित करने तथा प्राइज डिस्ट्रीब्यूशन और क्लोज़िंग सेरेमनी को यादगार बनाएं क्रिकेट की महाराज सौरभ गांगुली। विशिष्ट राजनीतिज्ञ तथा खेल और गाने में विशेष रुचि रखनेवाले कुणाल घोष, मंत्री सुजीत बोस, अरूप बिश्वास, टोली एक्ट्रेस श्रबंती और ऋतुपर्णा भी इस प्रोग्राम में सामिल हुए और कार्यक्रम में चारचंद लगाई।

मैं 'नर्वस' हूं : डेमी लोवेटो

हॉलीवुड से

हॉलीवुड की मशहूर गायिका और अभिनेत्री डेमी लोवेटो ने अपनी सेहत को लेकर फैली चिंताओं पर सफाई दी है। हाल ही में 32 वर्षीय डेमी ने सोशल मीडिया पर एक वीडियो शेयर किया, जिसमें वह खाना पकाती हुई नजर आई लेकिन वीडियो में उसके हाथ कांपते दिखे, जिससे उसके फैन्स चिंतित हो गए। हालांकि, डेमी ने सभी को आश्वस्त किया कि वह बिल्कुल ठीक है। वीडियो की शुरुआत में उसने हंसते हुए कहा, ''आज हम कुछ चीजें रोस्ट करने जा रहे हैं। यह देखने में थोड़ा कठिन लग सकता है, लेकिन ऐसा नहीं है। हम इसका मजा लेंगे, और मैं खुद से यह कह रही हूं क्योंकि मुझे थोड़ी घबराहट हो रही है।''

खाना पकाने के दौरान डेमी ने गलती से ओवन की बजाय स्टोव चालू कर दिया और कैमरे की तरफ देखकर कहा, ''मुझे बस नर्वस महसूस हो रहा है।''

वीडियो में कई क्लोज-अप शॉट्स में डेमी के हाथ कांपते नजर आए। एक प्रशंसक ने कमेंट किया, ''उन्हें इतना कांपते हुए देखना डरावना लग रहा है।''

इस पर डेमी ने जवाब दिया, ''मैं ठीक हूं! मैं वादा करती हूं।''

उसने यह भी स्वीकार किया कि घबराहट के कारण उसके हाथ कांप रहे थे। पोस्ट की कैप्शन में उसने लिखा, ''कुकिंग विद डेमी में हम अपने डर का सामना करना सीख रहे हैं। आज हमने पूरा रोस्टेड खाना बनाने की कोशिश की। यह परफेक्ट नहीं था, लेकिन उतना मुश्किल भी नहीं, जितना मैंने सोचा था। मुझे खुशी है कि अब यह रैसिपी मुझे आ गई है।''

डेमी पहले भी मानसिक स्वास्थ्य और नशे की लत से जुड़ी अपनी मुश्किलों के बारे में खुलकर बात कर चुकी है।

सितम्बर, 2024 में एक इंटरव्यू में उसने कहा था, ''मैंने हमेशा अपनी सच्चाई पूरी ईमानदारी से अपने प्रशंसकों से शेयर की है। मेरे अनुभव मुझे परिभाषित नहीं करते, बल्कि वे मुझे मजबूत बनाते हैं।''

उसने यह बात एक इंटरव्यू में कही जो चाइल्ड स्टार डॉक्युमैंट्री पर केंद्रित थी, जिसमें मनोरंजन जगत में युवाओं को होने वाली चुनौतियों पर रोशनी डाली गई।

लड़की और लड़का दोनों से बना सकती हूं रिश्ते

डेमी अपने बारे में खुल कर बात करने में यकीन करती है। एक बार उसने ऐसी बात कही थी, जिससे सब चौंक गए थे। दरअसल अपने ब्वॉयफ्रैंड से ब्रेकअप पर बात करते हुए उसने कहा था कि वह रिश्ते बनाने को लेकर डरती नहीं है। डेमी ने अपनी सैक्सुएलिटी को कोई नाम देने से इंकार करते हुए कहा था कि वह प्यार को किसी दूसरे व्यक्ति के साथ एक सरल-सा रिश्ता मानती है। इसे पुरुष या स्त्री में नहीं बांध सकते। उसने कहा कि वह किसी महिला के साथ भी रिश्ते रख सकती है।

दरअसल, डेमी ने अपने प्रेमी विल्मर वल्डेररामा के साथ अलगाव की घोषणा की थी। उसने अपने गाने 'कूल फॉर द समर' के गीत की एक लाइन गाने के साथ कहा था कि वह दोनों लिंगों के प्रति झुकाव वाली हो सकती है। यौन संबंधों को लेकर डेमी का कहना था कि वह किसी दूसरी महिला के साथ रिश्ता बनाने का विकल्प खुला रखेगी। उसका कहना था, ''मुझे लगता है कि यह एक ऐसी चीज है, जिसे किसी खास इमेज में बांधने की जरूरत नहीं। यह एक आसान चीज है।''

डेमी के दोनों लिंगों के प्रति झुकाव वाले बयान को लेकर काफी कुछ कहा गया था। सोशल मीडिया पर इसको लेकर यहां तक अटकलें लगने लगी थीं कि कहीं उसकी जिंदगी में किसी लड़की ने तो एंट्री नहीं मार ली है लेकिन इस बारे में उसने कोई खुलासा नहीं किया।

कभी 'हार' नहीं मानी : हेली शाह

छोटा पर्दा

हेली जल्द ही गुजराती फिल्म 'ईडा' में भी नजर आने वाली है, जिसे वह केवल एक फिल्म नहीं, बल्कि इमोशनल जर्नी बताती है।

इन दिनों धारावाहिक 'ज्यादा मत उड़' में नजर आ रही लोकप्रिय अभिनेत्री हेली शाह इसको लेकर काफी उत्साहित है।

ड्रामा और कॉमेडी का एक बेहतरीन मिश्रण 'ज्यादा मत उड़' की कहानी चुनौतियों से भरी दुनिया में अपना रास्ता खुद बनाने की कोशिश कर रहे युवाओं के संघर्ष और आकांक्षाओं के इर्द-गिर्द घूमती है। हेली ने कहा, ''एक साथ कई कलाकारों के साथ प्रोजैक्ट का हिस्सा होना मेरे लिए कभी चिंता का विषय नहीं रहा, क्योंकि मुझे अपने काम पर भरोसा है। मुझे सबसे ज्यादा रोमांचित करता है खुद को ऐसे किरदारों से चुनौती देना, जो एक अभिनेत्री के तौर पर मेरी सीमाओं को आगे बढ़ाते हैं।''

शो में हेली ने काजल की भूमिका निभाई है, जो एक आत्मविश्वासी और महत्वाकांक्षी महिला है, जो सामाजिक अपेक्षाओं से पीछे हटने से इन्कार करती है। अपने पहले निभाए गए पारम्परिक किरदारों से अलग, काजल बोल्ड, मुखर और हमेशा चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार रहती है।

उसने कहा, ''धारावाहिक में काजल की भूमिका निभाना मेरे लिए एक नया अनुभव रहा, क्योंकि यह बोल्ड, निडर और सामाजिक मानदंडों से बंधे रहने से इन्कार करती है। यह अपने मन की सुनती है, अपने लिए खड़ी होती है और मेरे द्वारा पहले निभाई गई भूमिकाओं की तुलना में एक अलग ऊर्जा लेकर आती है। मेरे लिए यह रोमांचक और फायदेमंद दोनों रहा है।''

वहीं एक इंटरव्यू में अपने जीवन के अनुभवों को लेकर उसने कहा, ''जीवन में कई बार ऐसे लोग होते हैं, जो खुलकर नहीं कहते, लेकिन उनके हाव-भाव से समझ आ जाता है कि वे आपको नीचे खींचना चाहते हैं। अपने ही घर में, रिश्तेदारों या करीबी दोस्तों में भी ऐसे लोग मिल जाते हैं लेकिन मैंने कभी हार नहीं मानी। आपकी नीयत साफ है और आप ईमानदारी से अपने सपनों के लिए काम कर रहे हैं, तो कोई भी आपको रोक नहीं सकता।''

अब तक का करियर

हेली ने अभिनय करियर की शुरुआत 8वीं कक्षा में शो 'गुलाल' से की थी। इसके बाद वह शो 'दीया और बाती हम' में नजर आई। इसके बाद उसने 'अलक्ष्मी - हमारी सुपर बहू' में अलक्ष्मी का किरदार निभाया। बाद में वह 'खेलती है जिंदगी आंख मिचौली' में दिखी। फिर वह शो 'खुशियों की गुल्लक आशी' में नजर आई।

'स्वरागिनी' में हेली ने स्वरा माहेश्वरी का किरदार निभाया था। 2016 में वह 'झलक दिखला जा' के सीजन 9 में दिखी। उसको बाद में 'देवांशी', 'मुकियाना प्यार मेरा', 'ये रिश्ते हैं प्यार के' और 'इश्क में मरजावां 2' जैसे कई शोज में देखा गया।

स्वत्वाधिकारी **'बात हिन्दुस्तान की'** (पाक्षिक) पत्रिका के लिए मुद्रक व प्रकाशक श्रीमती सोनी कुमारी झा, 23 रामकुमार गांगुली लेन, 2रा तल्ला कमरा नं. 203, पोस्ट- बी. गार्डेन, शिवपुर, हावड़ा-711103 (प. बंगाल) फोन न.: 8902221434 से प्रकाशित एवं चपला मुद्रण, 2/3/1, रामजी हजरा लेन, हावड़ा-711101 से मुद्रित, सम्पादक-**वैद्यनाथ झा**, फोन- 9798848926 पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए उतरदायी, ईमेल/वेबसाईट-www.baathindustanki@gmail.com
(Owner, Printer & Publisher of 'Baat Hindustan Ki' : Smt. Soni kumari Jha, 23, Ramkumar Ganguly Lane, 2nd floor, room no-203, PO : B.Garden, Shibpur, Howrah-711103, Mo. 9798848926 & Printed from CHAPLA MUDRAN 2/3/1 Ramji Hazra Lane, Shibpur, Howrah-711101, Editor : **Baidyanath Jha** Mo. 9798848926, Email/Website : www.baathindustanki@gmail.com)